(9)

(c) पूर्वाङ्ग - उत्तराङ्ग — जिस रागों का पूर्व अंग अधिक प्रबल होता है वह 12 बजे दिन से 12 बजे रात्रि तक तथा जिस राग का उत्तरांग अधिक प्रबल होता है 12 बजे रात्रि से 12 बजे दिन तक किसी समय गाया बजाया जाता है। जैसे — भीमपलासी केदार आदि पूर्वांग प्रधान और सोहनी, वसंत, जौनपुरी आदि उत्तरांग प्रधान

(d) रेध कोमल, रेध शुद्ध तथा गनि कोमल वाले राग — (1) जिन रागों में रिषभ तथा धैवत स्वर कोमल प्रयोग होता है उसे संधि-प्रकाश राग भी कहा जाता है, क्योंकि उन रागों का गायन उस समय होता है, जब दिन और रात्रि के संधि क्षण होती है। दूसरे शब्दों में सूर्योदय और सूर्यास्त का समय को संधि प्रकाश कहा जाता है। भारतवर्ष में ऋतु के अनुकूल सूर्योदय और सूर्यास्त का समय परिवर्तन होता है। अतः संधि प्रकाश का समय 4 बजे से 7 बजे तक प्रातःकाल पुनः 4 बजे से 7 बजे तक सायंकाल माना गया है। इस समय भैरव, पूर्वी मारवा थाट के सभी राग गाया बजाया जाता है।

(2) रे, ध, शुद्ध वाले राग — इस पर्याय में विलावल खमाज और कल्याण थाट के सभी राग आते हैं। इस वर्ग के रागों में यह विशेषता रहती है कि गांधार (ग) सर्वदा शुद्ध रहता है। इस वर्ग के रागों का गायन समय